छत्तीसगढ़ी व्याकरण –

छत्तीसगढ़ी व्याकरण के **प्रणेता हीरालाल काव्योपाध्याय** को माना जाता है।

छत्तीसगढ़ी भाषा में 10 स्वर है।

छत्तीसगढ़ी भाषा में व्यंजन संबधी होने वाले कुछ परिवर्तन इस प्रकार है –

जैसे –

ङ, ञ ये व्यंजन छत्तीसगढ़ी में **''न''** में परिवर्तित हो जाते है।

श, ष इनका प्रयोग ''**स, व ख** '' के रूप में होता है, छत्तीसगढ़ी व्याकरण में ष को प्रायः स कहा जाता है।

क्ष यह **छ, ख** के रूप में प्रयोग किया जाता है,

त्र इसे **'' तर, या त्तर''** के रूप में उच्चारित किया गया

ज्ञ का प्रयोग **''गिंया या ग्ग''** के रूप होता है।

य का **'ज'** में

द का **ध या ड** में

न का **ल** मे

त का **द व ड़** में

क का **ख व ग** में

लिंग के आधार पर छत्तीसगढ़ी भाषा का विभाजन –

लिंग के आधार पर इस तीन भागो में बांटा गया है–

स्त्रीलिंग पुल्लिंग, उभय लिंग

स्त्रीलिंग कि पहचान – ऐसे शब्दो से किया जाता है, जिनके अंत में ई या त लगा हो, स्त्रीलिंग कहलाता है।

स्त्रीलिंग शब्द – माटी, लुठी, चटाई या चटई, बात, रात आदि

किन्तु कुछ शब्द इसके अपवाद भी होते है।

अर्थात जिनके अंत में ई व त नही लगा होता फिर भी वे शब्द स्त्रीलिंग के अन्तर्गत आते है।

जैसे – दया, मया, चिंता, सुतिया, सूता, फरिया आदि के अंत में ''अ'' है, फिर भी ये शब्द स्त्रीलिंग कहलाते है।

पुल्लिंग कि पहचान – जिन शब्दो के अन्त में अ आता है, और जिनका व्यंजन शांत होता है, उसे पुल्लिंग कहते है, किन्तु इसके अन्त में त का प्रयोग नही होता है,

जैसे – दुआर, पाना, चाउर, टाटा, ओढ़ना, पखना, दसना आदि

उभयलिंग शब्द – ऐसे शब्द जिनका प्रयोग स्त्रीलिंग व पुल्लिंग दोनो के लिये होता है,

जैसे – लइका, चिरई, गिया, गरूआ, मनसे, जंवरिहा आदि

वचन – वचन दो प्रकार के होते है,

एकवचन और बहुवचन

एकवचन – जिन शब्दो का प्रयोग किसी एक वस्तु या व्यक्ति के लिये किया जाता है, उसे एक वचन कहते है,

जैसे – बइला, गईया, छेरी, लइका आदमी आदि शब्द एकवचन कहलाते है।

बहुवचन – छत्तीसगढ़ी भाषा में बहुवचन शब्द बनाने के लिये किसी भी एकवचन वाले शब्दो के साथ मन, सब, सबो, सब्बो, जम्मा, जमो, जम्मौ, गंज, खूब, निचट, बड़, बढ़ियन आदि लगाया जाता है

जैसे –

एकवचन	बहुवचन
गईया	गईयामन
बइला	सब बइला
घोड़ा	गंज घोड़
छेरी	खूब छेरी
लइका	निचट लइका
आदमी	बड़ आदमी

कारक चिन्ह –

छत्तीसगढ़ी व्याकरण के कारक चिन्ह इस प्रकार है –

		हिन्दी कारक	
कर्ता कारक	–	हर	(हिन्दी कारक ''ने'' के स्थान पर)
कर्म कारक	–	का या ला	(''को'' के स्थान पर)
करण कारक	–	ले यर से	(''से के द्वारा'' के स्थान पर)

संप्रदान कारक	–	का,ला,बर,खातिर (को,के लिए,)
अपादान कारक	–	ले या से (से अलग होना)
संबंध कारक	–	के (का, के, की)
अधिकरण कारक	–	मां, में (में, पर)
संबोधन	–	ऐ, ओ, गा, गे (ऐ,हे,अरे,ओ)

विशेषण – किसी संज्ञा या सर्वनाम कि विशेषता बताने वाले शब्दो को विशेषण कहते है।

छत्तीसगढ़ी शब्दो में ई,ए,हा,ऊ,उ,आ,औ,आऊ,आहू, रू, इया, उल,एला, ऐला, छुर, तुर, सुर आदि प्रत्यय लगाने से विशेषण का निर्माण होता है।

जैसे – धरम से धरमी

पाप से पापी

देस से देसी

हा लगाकर –

रंग – रंगहा

ऊ, उआ, औ, आ, अउ, आहू या रू लगाकर – घर से घरू, मया से मयारू

इया, इहां लगाकर – सहर से सहरिया

क्रिया – जिस शब्द से किसी कार्य का होना दर्शाया जाता है, उसे क्रिया कहा जाता है

क्रिया के दो वचन होते है, एकवचन, बहुवचन

पुरूष तीन प्रकार के होते है, प्रथम, छितीय, एवं तृतीय वचन

संज्ञा से क्रिया पद बनाने का प्रयोग प्रचुरता से विद्यतान है। जैसे – बतराइस, थपरियाइस आदि

काल के दो स्वरूप होते है – पहला स्वरूप सभ्य और दूसरा स्वरूप ग्राम्य है।

समास –

तत्पुरूष समास – ऐसे समास जिसमे कारक चिन्हो का प्रयोग होता है

जैसे – मास खाब – अर्थ – मास खाने वाला

लात मार – लात से मार

घर रहब – घर में रहने वाला

बुताचोर –

धन लोभ – धन का लोभ

द्विगु समास – जिस समास में पहला अक्षर किसी संख्या को दर्शाता है, उसे द्विगु समास कहते है।

जैसे – तिरलोक (त्रिलोक) अर्थात तीन लोक, जिसमें तीन एक संख्या है।

पंच मुखा – पांच मुख

सतकोसा – सात कोसा

कर्मधारय समास – इस समास में दूसरा अक्षर प्रधान होता है, जिसके बारे में वर्णन किया जाता है

जैसे –

बड़े दादा – पिताजी के बड़े भाई

करिया बादर – काला बादल, इसमें दूसरा शब्द बादल है, जिसकी विशेषता है कि वह काला है।

बहुब्रिही समास – ऐसा समास जिसमें कहे गये शब्दो का अर्थ कुछ और होता है, अर्थात जिन शब्दो से किसी तीसरे शब्द का होना दर्शाया जाये वह बहुब्रिही समास कहलाता है

जैसे –

सब – देखैया – इस का अर्थ है, सब देखने वाला, जिसका तीसरा अर्थ भगवान से है,

अर्थात सब देखने वाला भगवान है।

मुरली धारी – मुरली को धारण करने वाला – श्री कृष्ण

द्वंद समास – ऐसा समास जिसमें दोनो वाक्य प्रधान होते है अर्थात दोनो वाक्यो का अपना अर्थ होता है।

जैसे –

माई पिला – अर्थात मां और बच्चा, इस वाक्य में दोनो शब्दो के अपने अलग अलग अर्थ है।

अव्ययी भाव समास – वह समास जिसमें पहला शब्द ज्यों का ज्यों होता है,

जैसे – कुरीति – इस शब्द में कु यथावत है, और दूसरा शब्द रीति का अपना अलग अर्थ है।

छत्तीसगढ़ी भाषा और व्याकरण में सभी जातियो तथा जनजातियो कि अपनी अपनी भाषा और व्याकरण होता है, जिसके अनुसार उनका उच्चारण होता हैं